SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI
Monthly Newsletter

सफलता से सिद्धि तक

दिसम्बर 2025

"नई ऊर्जा, नया संकल्प: SEP फ़ेलोशिप बैच–2 का भव्य शुभारंभ"

उतई, दुर्ग–भिलाई | 14 दिसंबर 2025

शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में अग्रणी संस्था 'संकल्प एक प्रयास' ने अपनी प्रतिष्ठित SEP फ़ेलोशिप कार्यक्रम (बैच–2) का शुभारंभ एक भव्य और प्रेरणादायक समारोह के साथ किया। उतई, दुर्ग में आयोजित यह आयोजन संस्था की उस अटूट प्रतिबद्धता का सशक्त उदाहरण बना, जिसके केंद्र में जरूरतमंद बच्चों, महिलाओं और समुदायों का समग्र विकास निहित है। यह समारोह न केवल नए फ़ेलोशिप बैच की शुरुआत का अवसर था, बल्कि उन नि:स्वार्थ स्वैच्छिक कार्यकर्ताओ और विद्यार्थियों को सम्मानित करने का भी मंच बना, जो शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के वाहक हैं।

गरिमामयी उपस्थिति और शुभारंभ

कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई-

- श्रीमती सीमा कौशिक जी (अध्यक्षा – अवियाना महिला समाज, एन.एस.पी.सी.एल.)
- श्री दिवाकर कौशिक जी (मुख्य कार्यकारी अधिकारी – एन.एस.पी.सी.एल. एवं क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक – प. क्षे.II (एन. टी. पी. सी. लिमिटेड)
- श्री नील कुमार जी (मुख्य महाप्रबंधक एवं व्यापर इकाई प्रमुख, एन.एस.पी.सी.एल. भिलाई)

'आदर्श बाल ग्राम' की परिकल्पना और नई दिशा: संस्था के संस्थापक श्री परिमल सिन्हा जी ने अपने उद्घाटन संबोधन में 'आदर्श बाल ग्राम' की परिकल्पना साझा की। उन्होंने बताया कि कैसे गाँव की शिक्षित महिलाओं और बेटियों को सामाजिक बदलाव के अग्रदूत की तरह प्रशिक्षित कर, ग्रामीण विकास की मजबूत नींव रखी जा रही है।

इस अवसर पर—फेलोशिप करिकुलम (2026–27) का विमोचन, वास्तविक बदलाव की कहानियों पर आधारित पुस्तक और संकल्प एक प्रयास के वार्षिक प्रगति रिपोर्ट तथा आदर्श बाल ग्राम बुकलेट का भी अनावरण किया गया।

फ़ेलोशिप का जीवंत अनुभव : संकल्प एक प्रयास के पहले बैच (2022 - 25) के फ़ेलोज़ द्वारा किए गए कार्यों पर आधारित डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म का प्रदर्शन किया गया। फ़ेलोज़ ने स्वयं मंच से अपने अनुभव साझा किए—जिसने पूरे सभागार को भावुक और प्रेरित कर दिया।

डिजिटल विस्तार : वेबसाइट का शुभारंभ: इस अवसर पर 'संकल्प एक प्रयास' की आधिकारिक वेबसाइट भी लॉन्च की गई। डिजिटल माध्यमों के ज़रिए बच्चों के लिए मनोरंजन के साथ पढ़ाई और दूर-दराज़ क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

फ़ेलोज़ को सशक्त सहयोग: ABG फ़ेलो (जिन्होंने SEP फ़ेलोशिप कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है) को लैपटॉप एवं पिको प्रोजेक्टर प्रदान किए गए, साथ ही पहले बैच के 7 फ़ेलोज़ को 40,000 की वाहन सहायता राशि दी गई, ताकि वे अपने कार्यक्षेत्र में और अधिक प्रभावी ढंग से काम कर सकें।

जॉय ऑफ़ गिविंग : कार्यक्रम का सबसे भावनात्मक क्षण तब आया जब NMMSE परीक्षा में चयनित मेधावी छात्रों को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह पल 'संकल्प एक प्रयास' की उस सोच को दर्शाता है, जहाँ मेहनत, प्रतिभा और सपनों को सम्मान मिलता है।

विशिष्ट अतिथियों के प्रेरक संदेश

श्रीमती सीमा कौशिक जी ने कहा कि : "संकल्प एक प्रयास द्वारा तैयार किए जा रहे ये 'चेंजमेकर' समाज में बदलाव की नई इबारत लिख रहे हैं। एक शिक्षित और सशक्त बेटी पूरे समाज की दिशा बदल देती है।"

श्री दिवाकर कौशिक जी ने संस्था के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि : "संकल्प एक प्रयास केवल प्रयास नहीं, बल्कि एक सुदृढ़ और सतत आंदोलन है।"

श्री नील कुमार जी ने अपने संदेश में कहा कि: "ग्रामीण बच्चों को डॉक्टर और इंजीनियर बनाने का आपका प्रयास समाज के भविष्य को उज्ज्वल करता है, और देश के उज्जवल भविष्य की नींव रख रहा है।"

भविष्य की ओर सशक्त कदम : पुस्तक विमोचन, फ़ेलोशिप का शुभारम्भ, मेधावी छात्रों का सम्मान और सामुदायिक सहभागिता से भरा यह समारोह 'संकल्प एक प्रयास' के नए लक्ष्यों, नई ऊर्जा और व्यापक प्रभाव का प्रतीक बन गया। यह आयोजन स्पष्ट संदेश देता है कि—संगठित शिक्षा, समर्पित फ़ेलोशिप और निस्वार्थ प्रयास मिलकर समाज में क्रांतिकारी बदलाव ला सकते हैं।

पंचायत चलो अभियान:

"युवतियों और महिलाओं की आवाज़, प्रशासन के साथ संवाद"

राजनांदगांव | सामुदायिक सहभागिता की प्रेरक पहल

राजनांदगांव जिले में 'पंचायत चलो अभियान' के अंतर्गत सामाजिक सहभागिता और जमीनी स्तर पर विकास को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। इस अभियान के तहत 'संकल्प एक प्रयास' संस्था की गरिमा टीम और यूनिसेफ की 'युवोदय टीम' ने जिला कलेक्टर श्री जितेंद्र कुमार यादव जी से औपचारिक भेंट कर ग्रामीण मुद्दों पर सार्थक संवाद किया। यह संवाद केवल एक बैठक नहीं था, बल्कि ग्रामीण युवतियों और महिलाओं की चिंताओं, अनुभवों और प्रयासों को प्रशासन तक पहुँचाने का एक सशक्त मंच बना।

शिक्षा, स्वास्थ्य और बाल अधिकार पर केंद्रित संवाद: संवाद के दौरान टीमों ने जिलाधीश को ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं बाल सुरक्षा से जुड़े विषयों पर किए जा रहे जमीनी स्तर के कार्यों की विस्तृत जानकारी दी।

विशेष रूप से यह साझा किया गया कि कैसे -

- बच्चों की शिक्षा में निरंतरता
- किशोरियों की जागरूकता और सुरक्षा
- महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण अधिकार
- पंचायत स्तर पर युवाओं की सक्रिय भागीदारी को मजबूत करने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

इस पहल का मुख्य उद्देश्य था—पंचायत स्तर पर युवाओं और महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार बनाना और उनके प्रयासों को प्रशासन के साथ साझा करना।

गरिमा पहल और पंचायत स्तर पर विस्तार :
'संकल्प एक प्रयास' की गरिमा पहल के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों, किशोरों और महिलाओं के साथ निरंतर जागरूकता सत्र, सामुदायिक संवाद और व्यवहार परिवर्तन आधारित गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं। इन प्रयासों का लक्ष्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि संवेदनशील समूहों के जीवन स्तर में ठोस सुधार लाना है। इन प्रयासों के सकारात्मक परिणामस्वरूप जिला पंचायत द्वारा औपचारिक अनुमति पत्र जारी किया गया है, जिसके अंतर्गत 100 गाँवों में 'पंचायत चलो अभियान' का शुभारंभ किया जाएगा। इस अभियान को संकल्प एक प्रयास और यूनिसेफ के स्थानीय वालंटियर्स मिलकर संचालित करेंगे।

100 गाँव, एक लक्ष्य : बाल विवाह मुक्त समुदाय: आगामी चरण में इस अभियान के माध्यम से 100 गाँवों में व्यापक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे, जिनका उद्देश्य प्रत्येक गाँव को बाल विवाह मुक्त बनाना है।

इन कार्यक्रमों में सामुदायिक बैठकें, किशोर सभाएँ, जन-जागरूकता गतिविधियाँ और पंचायत स्तर पर संवाद शामिल होंगे।
प्रशासन की सराहना और आगे का मार्ग: श्री जितेंद्र कुमार यादव जी ने इन प्रयासों की सराहना करते हुए टीमों को शुभकामनाएँ दीं और शिक्षा, स्वास्थ्य एवं बाल संरक्षण जैसे विषयों पर समन्वित प्रयासों को सामाजिक परिवर्तन की दिशा में प्रभावी कदम बताया। उन्होंने भविष्य में भी इसी प्रतिबद्धता और समन्वय के साथ कार्य जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

'पंचायत चलो अभियान' यह स्पष्ट संदेश देता है कि जब युवा, महिलाएँ, समुदाय, प्रशासन और साझेदार संस्थाएँ एक साथ आगे बढ़ती हैं, तो सामाजिक बदलाव योजनाओं से निकलकर जमीनी वास्तविकता बन जाता है।

सुरक्षित माहौल
सुरक्षित भविष्य: बच्चों के लिए सामुदायिक पहल"

सिकोला LRC (सृजन) | सामुदायिक सहयोग की प्रेरक कहानी

सिकोला LRC (सृजन) के लिए हाल के कुछ दिन चुनौतीपूर्ण रहे। अनुशासन से जुड़ी समस्याओं के कारण शिक्षकों का मनोबल प्रभावित हुआ और स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि केंद्र को अस्थायी रूप से बंद करने की नौबत आ गई। लेकिन हार मानना 'संकल्प एक प्रयास' की पहचान नहीं है।

कैसे आया बदलाव?

अटूट प्रयास : सृजन की फेलो वीरबाला ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने लगातार नए शिक्षकों की तलाश जारी रखी और बच्चों की पढ़ाई को फिर से पटरी पर लाने के लिए प्रयास करती रहीं।

साझा जिम्मेदारी : समस्या को स्थायी रूप से सुलझाने के लिए स्कूल के प्रधानाध्यापक और ग्राम सरपंच के साथ संवाद किया गया। उन्हें यह समझाया गया कि बच्चों की शिक्षा के लिए सुरक्षित और अनुशासित वातावरण कितना आवश्यक है। ग्राम सरपंच ने 'संकल्प एक प्रयास' द्वारा बच्चों के लिए किए जा रहे समर्पित कार्यों की सराहना करते हुए भवन की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया।

त्वरित समाधान: सरपंच महोदया ने संवेदनशीलता दिखाते हुए तुरंत केंद्र परिसर में CCTV कैमरे लगवाने की व्यवस्था करवाई, ताकि अनुशासन और सुरक्षा दोनों सुनिश्चित हो सकें।

आज—सिकोला केंद्र फिर से मुस्कुरा रहा है
आज सिकोला LRC में फिर से रौनक है—बच्चे अनुशासित हैं, शिक्षक स्वयं को सुरक्षित महसूस कर रहे हैं और सीखने का माहौल दोबारा मजबूत हो गया है। यह जीत केवल एक संस्था की नहीं, बल्कि पूरे सिकोला गाँव की है, जिसने यह साबित किया कि जब बच्चों के हितों को प्राथमिकता दी जाती है, तो हर समस्या का समाधान निकल आता है।
"शिक्षक और शिक्षा का सम्मान ही समाज की असली प्रगति है।"
सिकोला LRC में आई अनुशासन की चुनौती को ग्राम पंचायत और स्कूल प्रशासन के सहयोग से सफलतापूर्वक सुलझा लिया गया है। सरपंच महोदया के सहयोग से अब सृजन लर्निंग सेंटर CCTV निगरानी में संचालित हो रहा है। बच्चों के भविष्य के लिए इस 'संकल्प' में साथ देने वाले सभी सहयोगियों का हृदय से धन्यवाद।

“एक छोटा सा कोना... और सीखने की दुनिया बदल गई”

— पढाई का कोना इनिशिएटिव, दिसम्बर 2025

हर बच्चे के पास एक शांत, सुरक्षित और अपना अध्ययन स्थान होना कितना ज़रूरी है—यह बात अक्सर बातों में रह जाती है। लेकिन सीख कार्यक्रम में इस वर्ष इसे वास्तविकता में बदलते देखा गया। दिसम्बर माह तक 60 केंद्रों के 385 बच्चों ने अपने घरों में अपना छोटा, प्यारा “पढाई का कोना” (Study Corner) बना लिया—एक ऐसा स्थान, जो सिर्फ पढ़ने की नहीं, बल्कि सपनों को आकार देने की जगह बन गया।

बदलती दिनचर्या, उभरती आदतें : कई घरों में पहली बार ऐसा हुआ कि बच्चों के लिए एक अलग चटाई, एक साफ़ दीवार, एक छोटी लकड़ी की चौकी या घर के किसी कोने को शिक्षा के लिए समर्पित किया गया। यह कोना भले ही छोटा हो, पर इसका असर बड़ा है। अब बच्चे रोज़ 1–2 घंटे नियमित रूप से पढ़ने बैठते हैं, और उनकी एकाग्रता में स्पष्ट सुधार दिखाई देने लगा है। जहाँ पहले पढ़ने का समय अनियमित था, वहीं अब बच्चे खुद घड़ी देखकर तय समय पर अपने कोने में बैठ जाते हैं।

परिवारों का बदलता दृष्टिकोण : सबसे दिल छू लेने वाला बदलाव परिवारों में देखा गया। माताएँ अपने बच्चों के लिए लैंप और कॉपी–पेन सहेजकर रखने लगीं। पिताओं ने पुराने टेबल की मरम्मत कर दी। कुछ बच्चों ने कहा—“यह कोना सिर्फ उसका नहीं, अब हमारा पढ़ने का समय भी बदल गया है।

” घर–घर में धीरे-धीरे "नियमित पढाई " की संस्कृति बन रही है। टीवी का वॉल्यूम कम हो जाता है, मोबाइल थोड़ी देर के लिए किनारे रख दिया जाता है, और पूरा परिवार सीखने को महत्व देता है— यह वही बदलाव है जो भविष्य की मजबूत नींव बनाता है।

एक छोटे कोने का बड़ा असर : ***“पढाई का कोना” अब सिर्फ अध्ययन का स्थान नहीं रहा, बल्कि बच्चों में नियमित पढ़ाई की आदत, जिम्मेदारी, स्कूल कार्यों में सुधार और परिवार के सहयोग के साथ आत्मविश्वास का मजबूत आधार बन गया है।***

ये सभी बदलाव संकेत देते हैं कि जब घर सीखने का साथी बनता है, तो बच्चे अपनी पूरी क्षमता से खिलने लगते हैं।

“अब पढ़ाई मेरे कमरे की नहीं, मेरे कोने की है। वहाँ बैठते ही लगता है कि मैं कुछ अच्छा कर सकता हूँ।”

- कक्षा 4 की एक बच्ची, धमतरी

रजत जयंती शरद मेला

“छत्तीसगढ़ी लोक कला में रचा-बसा सांस्कृतिक उत्सव”

स्थान: NSPCL भिलाई | दिनांक: 14 दिसंबर 2025

NSPCL भिलाई में आयोजित रजत जयंती शरद मेला के अवसर पर सजी सांस्कृतिक संध्या पूरी तरह से छत्तीसगढ़ी रंगों और परंपराओं में रंगी नजर आई। इस विशेष मंच पर ‘संकल्प एक प्रयास’ के ऊर्जावान फेलोज़ और बच्चों ने अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से यह सशक्त संदेश दिया कि आधुनिकता के साथ अपनी सांस्कृतिक जड़ों को सहेजना भी उतना ही आवश्यक है।

लोक संस्कृति की जीवंत झलक : सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान प्रस्तुत लोक नृत्यों ने छत्तीसगढ़ के गौरवशाली इतिहास, पारंपरिक पर्वों और ग्रामीण जीवन की झलक मंच पर जीवंत कर दी। फेलोज़ और बच्चों की पारंपरिक वेशभूषा, लयबद्ध कदमताल और भाव-भंगिमाओं में छत्तीसगढ़ की माटी की खुशबू साफ महसूस की जा सकती थी।

हर प्रस्तुति दर्शकों के लिए केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि लोक संस्कृति से जुड़ने और उस पर गर्व करने का अवसर बनी।

समर्पण और अनुशासन को मिला सम्मान : कार्यक्रम के समापन पर ‘संकल्प एक प्रयास’ के फेलोज़ और बच्चों को उनके अनुशासित, संगठित और समर्पित सहयोग के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया। उन्हें प्रदान किए गए प्रशस्ति पत्र उनके निरंतर परिश्रम, टीम भावना और प्रतिबद्धता के प्रतीक बने।

NSPCL प्रबंधन ने यह स्वीकार किया कि इस आयोजन की सफलता के पीछे फेलोज़ और बच्चों की सक्रिय भागीदारी और अथक प्रयास एक मजबूत स्तंभ रहे।

रजत जयंती शरद मेला केवल एक सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं रहा, बल्कि यह इस बात का सशक्त उदाहरण बना कि जब युवा और बच्चे अपनी लोक परंपराओं को मंच पर जीवंत करते हैं, तो संस्कृति केवल दिखाई नहीं देती—वह महसूस की जाती है।

नवोदय की राह

“शहर से दूर गाँवों में सपनों को पंख”

— दिसम्बर 2025,

दिसम्बर का महीना सीख कार्यक्रम में बच्चों के लिए सिर्फ पढ़ाई का नहीं, बल्कि सपनों को आकार देने का था। नवोदय प्रवेश परीक्षा की तैयारी पूरे क्षेत्र में बच्चों और शिक्षकों के लिए एक बड़ी सीख–यात्रा बन गई। इस वर्ष 1900 से अधिक बच्चों ने, जहाँ सीख LRC संचालित होते हैं, वहाँ मॉक टेस्ट में भाग लिया। इन परीक्षाओं ने बच्चों को न सिर्फ परीक्षा के पैटर्न से परिचित कराया, बल्कि उनमें आत्मविश्वास और समय प्रबंधन की क्षमता भी बढ़ाई।

60 नए गाँव—जहाँ सीख नहीं, पर सीख की लौ जली: इस बार 60 ऐसे गाँव भी इस तैयारी अभियान से जुड़े, जहाँ सीख LRC नहीं चल रहे थे। लेकिन इन गाँवों में गरिमा फेलो आगे आए—उन्होंने न सिर्फ इन क्षेत्रों को जोड़ा, बल्कि 598 बच्चों की तैयारी की जिम्मेदारी खुद उठाई। यह अपने आप में एक प्रेरक कदम था—इन गाँवों के बच्चों को पहली बार व्यवस्थित, योजनाबद्ध और मार्गदर्शित तैयारी का अवसर मिला।

समुदायिक शिक्षक बने तैयारी का मजबूत आधार: नवोदय तैयारी को 310 गाँवों तक पहुँचाने के लिए समुदाय ने 525 शिक्षकों को बुनियादी शिक्षण कौशल, परीक्षा पैटर्न व SAT–MAT तकनीकों का प्रशिक्षण दिया गया।

ये शिक्षक रोज़ गाँव–गाँव जाकर बच्चों को पढ़ाते रहे, जबकि प्रश्न बैंक, वर्कशीट और मॉडल टेस्ट जैसी सामग्री ने बच्चों में नियमित स्वयं-अभ्यास की मजबूत आदत विकसित की—जो किसी भी प्रतियोगी परीक्षा की असली नींव है।

नवोदय तैयारी से बढ़ता आत्मविश्वास और नए अवसर

नवोदय प्रवेश परीक्षा की तैयारी से बच्चों में परीक्षा का डर कम हुआ, समयबद्धता व तर्कशक्ति में सुधार आया, कमजोर बच्चों को अतिरिक्त सहयोग मिला, और समुदाय तथा शिक्षकों–फेलो के बीच समन्वय मज़बूत हुआ।

“मुझे पहली बार लगा कि मैं भी नवोदय परीक्षा पास कर सकती हूँ!” (दीपिका..ग्राम देवादा)

यही विश्वास सीख का असली प्रभाव है। यह तैयारी केवल परीक्षा के लिए नहीं, बल्कि ग्रामीण बच्चों को जीवन बदलने वाले अवसरों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सभी फेलो और सामुदायिक शिक्षकों की मेहनत ने सैकड़ों बच्चों को उनके सपनों के एक कदम और करीब पहुँचा दिया।

“विकास संवाद की कार्यशाला: जब अनुभव बने कहानियाँ”

— संकल्प एक प्रयास की तीन दिवसीय प्रशिक्षण यात्रा

दिसंबर माह संकल्प एक प्रयास के लिए सीखने और आत्ममंथन का विशेष अवसर लेकर आया। इस दौरान संस्था द्वारा सीख, सृजन और गरिमा कार्यक्रमों के बैच–1 और बैच–2 के 30 प्रतिभागियों के लिए एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का सफल आयोजन, ‘विकास संवाद’ संस्थान के सहयोग से किया गया।

इस कार्यशाला का उद्देश्य केवल लिखना सिखाना नहीं था, बल्कि प्रतिभागियों को यह समझाना था कि—अपने आसपास घट रही वास्तविक घटनाओं और व्यक्तिगत अनुभवों को प्रभावशाली कहानी में कैसे बदला जाए। कहानी कहने की कला—अनुभव से अभिव्यक्ति तक कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों को बताया गया कि एक साधारण घटना भी तब सशक्त बन जाती है, जब उसे सही भाव, संरचना और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया जाए।

प्रशिक्षकों ने विस्तार से समझाया कि -

- कहानी को आकर्षक कैसे बनाया जाए
- पाठक को शुरू से अंत तक कैसे जोड़े रखा जाए
- शब्दों के माध्यम से भावनाओं को कैसे जीवंत किया जाए

ताकि हर कहानी केवल पढ़ी न जाए, बल्कि सीधे पाठक के हृदय को छू सके। पत्रकारिता के सूत्र: 5W–1H की समझ प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था पत्रकारिता के मूल सिद्धांत—5W और 1H (क्या, कौन, कब, कहाँ, क्यों और कैसे)।

प्रतिभागियों ने सीखा कि -

- किसी घटना की पूरी तस्वीर कैसे बनाई जाती है
- तथ्यों को कहानी में संतुलित ढंग से कैसे पिरोया जाए
- और कहानी पढ़ने के बाद उसके लिए एक सटीक, प्रभावी और अर्थपूर्ण शीर्षक कैसे चुना जाए।

इन अभ्यासों ने प्रतिभागियों की सोच को अधिक स्पष्ट और लेखन को अधिक प्रभावी बनाया।

रचनात्मकता और संवाद की नई उड़ान : तीन दिनों की इस कार्यशाला ने प्रतिभागियों के भीतर रचनात्मक लेखन, विचारों की स्पष्टता और प्रभावी संवाद कौशल को नई दिशा दी। अब वे अपने अनुभवों, समुदाय की कहानियों और बदलाव की झलकियों को और अधिक आत्मविश्वास व संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत कर सकेंगे।

'विकास संवाद' के सहयोग से आयोजित यह कार्यशाला संकल्प एक प्रयास की उस सोच को मजबूती देती है, जहाँ हर फेलो सिर्फ कार्यकर्ता नहीं, अपने अनुभवों का सशक्त कथाकार भी बनता है। यह प्रशिक्षण निश्चय ही आने वाले समय में जमीनी बदलाव की कहानियों को नई आवाज़ और नई पहचान देगा।

मजबूत नींव

उज्ज्वल भविष्य : मुक्तांगन प्रशिक्षण से सशक्त हुई गरिमा फेलोज़"

मुंबई | प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

ग्रामीण बच्चों की शिक्षा की नींव को और मजबूत करने की दिशा में गरिमा टीम की फेलोज़ ने मुंबई स्थित प्रतिष्ठित मुक्तांगन संस्थान में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) का गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस प्रशिक्षण का उद्देश्य फेलोज़ को 0–6 वर्ष के बच्चों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास से जुड़ी बारीक समझ देना था, ताकि वे ग्रामीण क्षेत्रों में प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता को जमीनी स्तर पर बेहतर बना सकें।

शिक्षण का फोकस: बचपन की सही शुरुआत

"मजबूत नींव, मजबूत भविष्य" के सिद्धांत पर आधारित इस प्रशिक्षण में गरिमा फेलोज़ ने यह सीखा कि प्रारंभिक वर्षों में दिया गया सही मार्गदर्शन बच्चे के पूरे जीवन की दिशा तय करता है। फेलोज़ को बाल-केंद्रित, संवेदनशील और गतिविधि-आधारित शिक्षण पद्धतियों से परिचित कराया गया, जो बच्चों की जिज्ञासा, आत्मविश्वास और सामाजिक कौशल को विकसित करती हैं।

सिद्धांत से व्यवहार तक: सीख जो अनुभव बनी

यह प्रशिक्षण केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहा। गरिमा फेलोज़ ने प्री-स्कूलों और आंगनवाड़ियों में जाकर बच्चों के साथ समय बिताया, गतिविधियाँ संचालित कीं और खेल-खेल में सीखने की विधियों को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया।

अनुभवी फैकल्टी के मार्गदर्शन में मिले इन व्यावहारिक अनुभवों ने फेलोज़ के आत्मविश्वास, कौशल और बच्चों की जरूरतों को समझने की क्षमता को और सशक्त किया।

मैदान में वापसी: सीखने से होगी बदलाव की शुरुआत

प्रशिक्षण के बाद गरिमा फेलोज़ अब इस सीख को 'आदर्श बाल ग्राम' और 'मॉडल आंगनवाड़ी' की अवधारणा के रूप में गाँवों में लागू करेंगी।

वे आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर—

- दैनिक शैक्षणिक शेड्यूल को अधिक प्रभावी बनाएँगी
- मुक्तांगन की गतिविधि-आधारित शिक्षण पद्धतियाँ शुरू करेंगी
- समुदाय को प्रारंभिक शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक करेंगी

फेलोज़ का लक्ष्य हर बच्चे के लिए ऐसा वातावरण तैयार करना है, जहाँ उसकी शुरुआती शिक्षा इतनी मजबूत हो कि वह भविष्य की चुनौतियों का आत्मविश्वास के साथ सामना कर सके।

मुक्तांगन में प्राप्त यह प्रशिक्षण गरिमा फेलोज़ के लिए केवल एक सीख नहीं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रारंभिक शिक्षा को दीर्घकालिक रूप से सुदृढ़ करने की दिशा में एक मजबूत आधार बनकर उभरा है। यह पहल निश्चय ही आने वाले वर्षों में बच्चों, परिवारों और समुदायों के जीवन में स्थायी सकारात्मक बदलाव लाएगी।

SEP की गतिविधियाँ और कवरेज"

सीख : प्रोग्राम

फेलो
48

सामुदायिक शिक्षक
491

लर्निंग रिसोर्स सेंटर
250 (11585 छात्र)

ई-मर्ज (डिजिटल कक्षाएं)
178

विलेज लेवल शिक्षा समिति (ABG सपोर्ट समूह)
217

सीख पीयर लीडर
1297

नवोदय परीक्षार्थी
2141

सहभागी पालक
4404

सृजन: प्रोग्राम

फेलो
41

सामुदायिक शिक्षक
432

लर्निंग रिसोर्स सेंटर
246 (8191 छात्र)

ई-उड़ान (डिजिटल कक्षाएं)
45

विलेज लेवल शिक्षा समिति
24

सृजन पीयर लीडर
381

NMMSE प्रयासरत छात्र
983

नवोदय विद्यार्थी
225

सहभागी पालक
942

स्टेम वर्कशॉप
115 (2056 छात्र)

कंप्यूटर लैब
15 (951 छात्र)

होम विजिट
552

गरिमा : प्रोग्राम

फेलो
42

गरिमा मंच
212 (17081 प्रतिभागी)

स्कूल कार्यशाला
575 (35154 छात्र)

किशोर सभा
315 (3780 छात्र सदस्य)

ABG सपोर्ट समूह
130

होम विजिट
768

जागरूकता कार्यक्रम (नुक्कड़-नाटक)
64 सत्र

गरिमा पीयर एजुकेटर
125

SBI छात्रवृति सहयोग
68

SIR सहयोग
310 परिवार

बाल विवाह मुक्त ग्राम
150

प्रिय पाठकों,

दिसंबर 2025 का यह महीना 'संकल्प एक प्रयास' के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुआ है। जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे केवल काम नहीं, बल्कि वे अनगिनत मुस्कुराते हुए चेहरे नज़र आते हैं, जिनके सपनों को हमने मिलकर पंख दिए हैं।

SEP फ़ेलोशिप (बैच-2) का भव्य शुभारंभ हमारी उस प्रतिबद्धता का प्रमाण है कि हम बदलाव के अग्रदूतों की एक नई पीढ़ी तैयार कर रहे हैं। 'आदर्श बाल ग्राम' की परिकल्पना अब महज़ एक विचार नहीं, बल्कि ज़मीनी हकीकत बन रही है। मुझे गर्व है कि हमारी ग्रामीण बेटियाँ और महिलाएँ आज नेतृत्व संभाल रही हैं।

हमारी यात्रा लंबी है, लेकिन हमारे हौसले बुलंद हैं। आइए, हम सब मिलकर शिक्षा, संस्कार और स्वावलंबन की इस मशाल को हर उस घर तक पहुँचाएँ जहाँ अंधेरा है।

शुभकामनाओं सहित,

परिमल सिन्हा,
संस्थापक- संकल्प एक प्रयास

हमारे सहयोगी संस्थाएं

Caring Friends – Helping Good NGOs Perform Better – MUMBAI
SARDA – SARDA ENERGY & MINERALS LTD.
DONATEKART
Arpan Foundation
Asha for Education – Bringing hope through education
muktangan – learning & growing together
आविष्कार – गणित-विज्ञान की एक प्रयोगशाला – Aavishkaar – Center for Science, Math, Arts and Technology
phf Paul Hamlyn Foundation
INVOLVE – Building Tomorrow
VIKAS SAMVAD
अध्ययन ADHYAYAN

SANKALP – Empowering Dreams, Building Future

SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI

Sankalp ek prayas, Virat Nagar, Utai, Durg (C.G.)
Email : sankalpekprayas@gmail | Web : www.sankalpekprayas.org

Follow us on : @SankalpEkPrayas-s4i @SANKALPEK_PRAYAS